रविवार, दिनाँक **15-09-2024** को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

मेरे सामने दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है।

यह तो कभी भी छिपता नहीं है।

यह तो कभी भी मिटता नहीं है ।।

हर दम दिखता रहता है ।

मेरे सामने दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है।।

यह तो कहीं से आता नहीं है।

यह तो कहीं भी जाता नहीं है ।।

हर अन्दर सजता है ।

मेरे सामने दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है।।

इस की तो है शान निराली।

चारों ओर है जिसकी लाली ।।

कैसा सुन्दर लगता है ।

मेरे सामने दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है।।

जनचर बनचर है इसके सवाली।

सजनों यह है सतवस्तु का वाली ।।

चतुर्भुजधारी लगता है ।

मेरे सामने दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है।।

अजर अमर है अडौल निश्चल ।

सबका है यह मालक पालक ।।

बेअन्त बेअन्त कहलाता है ।

मेरे सामने दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है।।

यह दर्शन तस्वीर नहीं है ।

यह दर्शन तो शरीर नहीं है।।

यह दर्शन है अपना आप।

ज्योति स्वरूप है ब्रह्म प्रकाश ।।

इसका ही सजनों करना जाप ।

मेरे सामने दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है।।

सजनों यह कीर्तन सुनकर इसके भाव हमारे मन में उतर जाने चाहिये ताकि मन स्वतः ही शान्त अवस्था को प्राप्त हो अन्तर्मुखी हो जाये व सदा अपने यथार्थ में स्थित बना रहे। इस सन्दर्भ में सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा हैः-

अपना आप पछानना, रघुवर साडे अन्दर वसदा।

रघुवर साडे अन्दर वसदा, रघुवर साडे अन्दर वसदा।।

उसे दा हिवे चानणा, सजन अपने घर विच वसदा।

सजनों अगर इन शब्दों के अर्थों को हम समझकर धारण करें और अपने जीवन का निर्वहन तद्नुसार उसी सत्य पर स्थिरता से बने रहकर करें तो कोई कारण नहीं बनता कि हमारा मन बहिर्मुखी हो जाये। निश्चित रूप से ऐसा करने से वह अंतर्मुखी हो जाता है। यह होता है - अपने आप में स्थिरता से बने रह सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर चलते हुए निष्काम जीवन जीने के योग्य बनना। ऐसा सुनिश्चित कर लेने पर इन्सान जान जाता है कि मैं वास्तव में शरीर नहीं अपितु आत्मा हूँ। आत्मा क्या है? - परमात्मा का प्रकाशित स्वरूप। तो फिर हम में भेद कहाँ हुआ, हम तो अभेद हुए। इसीलिये सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ बार-बार हम मायावी संसार में उलझे हुए सजनो को भिन्न-भिन्न तरीकों से समझा रहा है कि हे मानव ! सावधान हो जा और सावधान होकर बौद्धिक रूप से अपने यथार्थ पर पकड़ रख। फिर उसी यथार्थता अनुसार ही कुदरत के नियमबद्ध हो जगत में जो करने आया है, निष्काम भाव से कर। अब निष्काम भाव से ही क्यों? - क्योंकि निष्काम रास्ता ही जीवन का विचारयुक्त रास्ता है। निष्कामी का आधार सदा सत्य होता है। तभी तो वह धर्मधारी एक धर्मज्ञ इन्सान की तरह ब्रह्ममय अवस्था अनुसार निर्भयता से जगत में विचरता है व मन-वचन-कर्म द्वारा अपने यथार्थ का परिचय देता है ताकि उसके इस परिचय से कलुकाल के भाव-स्वभावों में उलझे हुए इन्सान जीवन का, दुनियाँ का व जगत का खेल समझ सकें। आशय यह है कि जिस संसारी फ़र्ज अदा में वे उलझे बैठे हैं, उसकी नश्वरता व अजरता अमरता की गहराई को समझें और यह सत्य उनके मन में ठहर जाये कि अमरता ही मेरा वास्तविक अस्तित्व है यानि मैं अमर हूँ। इस तरह फिर जीवन में चाहे कितना ही उतार-चढ़ाव, दुःख-सुख, अमीरी-गरीबी आये, तब भी वह अपनी अजरता-अमरता में दृढ़ता से ठहरा रहे। सजनों जानो इस प्रकार जीवन का रास्ता स्वयंमेव सवलड़ा व आनन्दप्रद हो जाता है।

इस सन्दर्भ में सजनों सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते हम अपना जीवन परमानन्द से व्यतीत करने में सक्षम बने, इस हेतु हमारे लिये बनता है कि हम सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ की वाणी को अमल में लाते हुए उसे अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनायें यानि अपने जीवन की दिनचर्या को सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के विचारों के अनुसार ढालें व सबके प्रति अपना कर्त्तव्य समझकर उसे हँस कर निभायें। तभी हम एक अच्छे

कर्त्तव्यपरायण व्यक्ति बनने में सक्षम हो सकते हैं और जीवन की जो भी मर्यादायें हैं, उन पर स्थिरता से बने रह मर्यादा-पुरुषोत्तम कहला सकते हैं। सजनों यही पुरुषार्थ राम रूप में हुआ, यही पुरुषार्थ कृष्ण रूप में हुआ और यही पुरुषार्थ दस पातशाह जी के रूप में हुआ। अन्य शब्दों में सजनों यही पुरुषार्थ ही जगत से विजय प्राप्त करने का प्रतीक है। अतः ऐसे बनो, हाँ ऐसे बनो और ऐसे बनकर एक तो अपना जीवन आबाद कर लो और दूसरा आत्मा की सर्व-व्यापकता का दर्शन कर परमात्मा क्या है, उसके यथार्थ को जान जाओ और आत्मज्ञानी कहलाओ। अब भजन सुनोः-

अन्दर राहवाँ मैं बाहर न जावाँ, सदके जावाँ वारी महाराज।

सदके जावाँ बलिहार जावाँ, साँवले चरणाँ तों जावाँ वारी महाराज।।

अन्दर आवे प्रेम ते प्रीति, बाहर कामना सतावे महाराज।

कामना सतावे ते पई घबरावे, चैन न आवे दिन रात महाराज।।

अन्दर प्यार ते लाडाँ नू देखां, बाहर क्रोध सतावे महाराज।

क्रोध सतावे घर विच झगड़ा पवावे, वैर विरोध दिखावे महाराज।।

साँवले चरणां विच शान्ति आवे, बाहर लोभ सतावे महाराज।

लोभ सतावे रघुनाथ जी दा रस्ता भुलावे, भय दिखावे हरदम महाराज।।

मोह सतावे दुनियाँ विच फंसावे, घबराहट दिखावे हरदम महाराज।।

अन्दर हैन फुलाँ दियाँ माला, बाहर दुःखां दी माला महाराज।

दुःखाँ दियाँ माला ते भरम दिखावन, भरमदी आई तुआडे द्वारे महाराज।।

अन्दर हैन फुलाँ दियाँ सेजाँ, बाहर कंडियाँ दियाँ सेजाँ महाराज।

कंडियाँ दियाँ सेजाँ ते चोभा देवन, शरण मैं आई तुम्हारी महाराज।।

अन्दर हैन फुलाँ दियाँ वर्षा, बाहर तृष्णा दी सर्पनी महाराज।

फुकारे मारे ते ज़हर खिलारे, रक्षा करो तुसीं आप महाराज।।

अन्दर देखां सम सन्तोष, बाहर अहंकार सतावे महाराज।

अहंकार सतावे अभिमान दिखावे, मौत खरीदी हुण आप महाराज।।

दासी ए पुकारदी ए, हुण पंजां तों बचाओ महाराज।

पंजां तों बचाओ पंजे मार मुकाओ, इको रूप दिखाओ महाराज।।

सजनों जब आप सचेत होकर बैठते हो तभी तो बात अन्दर उतरती है, अतः सचेत होकर बैठा करो। याद रखो जब तक ऐसा नहीं करते यानि शास्त्रविहित् विचारों या अर्थों को वर्त-वर्ताव में लाना सुनिश्चित नहीं करते तब तक कुछ नहीं बनने वाला। ज्ञात हो कि इस भजन द्वारा सच्चेपातशाह जी बड़ी सरलता और सहजता से आज के प्रत्येक पथ-भ्रष्ट इन्सान को, जो कि शारीरिक स्वभावों में फँसे व उलझे हुए हैं, समझाते हुए कह रहे हैं कि अन्तर्मुखी हो जाओ। अपने ख़्याल/सुरत को बाहर से समेटकर आत्म-स्वरूप में ध्यान स्थित कर लो। इसके प्रति प्रोत्साहित करने हेतु वह फिर कहते हैं कि यह अपने अन्तर्घट में आध्यात्मिक क्रान्ति छेड़ने की व स्वाभाविक परिवर्तन लाने जैसी शुभ मंगलकारी बात है। ऐसा करने से यानि अन्तर्ध्यान होने से जीवन अधिक सुखद व आनन्दप्रदायक बन जाता है। इसके विपरीत बहिर्मुखी होने पर जीवन अधिक कष्टदायक यानि दुःखों से भर जाता है। इन्सान को तब विशूचिका सताने लगती है और उसे पल-पल मौत का भय डराने लगता है। जितना ही हम डरते हैं, मौत उतनी ही समीप आती जाती है। इस तरह जो इन्सान अज्ञानमय अवस्था में होता है, मौत उसका ही भक्षण करती है जबकि आत्मज्ञानी के नजदीक मौत फटक ही नहीं पाती। आप भी सजनों ऐसे ही आत्मज्ञानी बनो। इस संदर्भ में आपके पास यह जीवन एक सुनहरी अवसर के समान है, अतः समझदार बनो और खुद को और अपने संगी-साथियों को शारीरिक स्वभाव देकर मृत्य के मार्ग पर अग्रसर मत करो। सजनों हम देखते हैं कि आज के मानवों की ऐसी स्थिति हो गई है कि आत्मीयता के भाव-स्वभाव अपनाने का नाम सुनते ही वे विचलित हो जाते हैं। जिसका सीधा सा मतलब है कि सब के सब शारीरिक भाव-स्वभावों के सामने पूर्णतया हारे पड़े हैं यानि उनके अन्दर ऊपर उठने की हिम्मत ही नहीं रही। आपने अपनी औलादों की पालना इस तरीके से ही की है। यह महापाप है जबकि खुद और परिवारजनों को मर्यादित जीवन जीने के प्रति सुचेत करना हमारा परम कर्त्तव्य था। कम से कम माता का तो यह कर्त्तव्य बनता ही बनता है कि वे अपने ही खून को कुमार्ग पर मत चढ़ाये और बच्चे की बढ़ती आयु के दौरान अपने

शारीरिक स्वभावों का प्रदर्शन न करे। सजनों यह पूर्णतया जीवन का निरादर है। अब जिसका निरादर करोगे वह निरादर तो पलटकर आपके पास आयेगा ही। मानो कि बीता हुआ जीवन पलटकर वापिस नहीं आता। निःसन्देह अब तो वैसे भी सतयुग आने वाला है। सतयुग की अवधि तीन युग के बराबर होती है। अतः यदि अब भी जीवन न बनाया तो उन तीनों युगों में दग्ध-भस्म में ही पड़े रहेंगे। सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि यह'अपने लिये आप ही लिड खरीदने की बात होगी।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों अपने जीवन के साथ ऐसा नकारात्मक खेल करना कदापि इन्सानियत नहीं है अपितु धोखा है। हम अपने शरीर की सुन्दरता की ओर लगे रहे, लगे रहे। शरीर के प्रदर्शन हेतु कई प्रसाधन प्रयोग करते रहे, यह अच्छी बात नहीं है अपितु कामुक भाव अपने मन में जाग्रत करने की बात है। इसी कामुक भाव के कारण मन की सफाई करना हमारे वश में नहीं रहता। इतनी सी लापरवाही के कारण दिन-प्रति-दिन मन मैला होता जाता है और उस की सफाई की तरफ हमारा ध्यान नहीं जाता। परिणामतः काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार हमें घेर कर सताना आरम्भ कर देते हैं। अब जब अहंकार सिर चढ़ जाए तो मौत आ जाती है। इस संदर्भ में क्या आप सतवस्तु के ग्रन्थ के अनुसार बता सकते हो कि क्रोध अवस्था में एक इंसान को कौन सी क्रिया करनी चाहिये या फिर कौन सी औषधि लेनी चाहिये? बताओ, हाथ खड़े करो।

'किसी ने भी हाथ खड़ा नहीं किया'।

तो सजनो जानो कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में लिखा हुआ है कि जब क्रोध आये तो क्रोधित अवस्था में ही दर्पण में मुख देखना चाहिए। ऐसा करने से जब आपको अपना बिगड़ा हुआ चेहरा शीशे में स्पष्ट नजर आता है तो क्रोध करने का दिल नहीं करता। कहने का अभिप्राय यह है कि चेहरे की सुन्दरता के प्रति ही जो केवल जाग्रत हैं, कम से कम उस अवस्था में चेहरा देखकर तो सम्भल सकता है और यह समझ सकता है कि यदि मैं क्रोध करूँगा या करूँगी तो उसका जबरदस्त प्रभाव मेरे तन-मन पर ही पड़ने वाला है यानि मेरी अन्दरूनी व बैहरूनी दोनों सुन्दरता भँग होने वाली है जैसा कि अभी हुआ पड़ा है। इसके बारे में शास्त्र कहता है:-

जेहड़े वेले भैड़ा क्रोध जो आवे, अंधेरा देख ह्रदय घुस जावे।

डिंगा चिब्बा मुंह बनावे, शीशे विच मुख वेख, खेड तूं चरणां दे नाल।।

इन पंक्तियों से ज्ञात होता है कि क्रोध अत्यन्त बुरा है और प्रकाशमय अवस्था के न होने पर यह अन्दर यानि मन में घुस जाता है। इस संदर्भ में सजनों मानो कि यदि आपका ख़्याल/ध्यान अपने अस्तित्व में स्थिर है तो मानो प्रकाशमय अवस्था है। ऐसे में क्रोध अन्दर नहीं घुस सकता। सजनों यह औषधि है क्रोध से बचने की। हम इसका प्रयोग क्यों नहीं करते? इसी तरह लोभ की व मोह की औषधि भी ग्रन्थ में स्पष्टतया विदित है। अब औषधियाँ हमारे घर में हैं, पर हमे परख ही नहीं है कि कौन सी औषधि लेनी है। इसके लिये हम बाहर भागते-भटकते फिर रहे हैं कि उसके प्रवचन अच्छे हैं इनके पास चलो, उसके बहुत अच्छे हैं उसके पास चलो। अब प्रवचन क्या करेंगे, हम तो बहरे हो चुके हैं, प्रवचन सुनकर भी क्या प्राप्त होने वाला है? इस सन्दर्भ में सजनों जानो कि अगर हम सुचेत हैं तो जो सार्थक प्रवचनों का कुदरती प्रवाह हमारे अन्दर निरन्तर चल रहा है हम अन्तर्मुखी होकर यानि ख़्याल/ध्यान प्रकाश में जोड़ कर उन्हें सुन सकते हैं और अपने जीवन को प्रकाशमय बना सकते हैं। यही नहीं इस तरह हम आत्म-स्वरूप में स्थित होकर आत्मिक गुणों अनुरूप भाव-स्वभाव अपनाकर आत्मीयता के प्रतीक बन सकते हैं। परन्तु इसके लिये केवल शास्त्र के मार्ग-दर्शन अनुरूप मन में आध्यात्मिक-क्रान्ति छेड़ने की आवश्यकता है। अतः हम तो यही कहेंगे कि अपने सजन बनो, अपने सजन बनो क्योंकि यह जन्म बार-बार प्राप्त नहीं होता अन्यथा मान लो दग्ध-भस्म है। यह अवस्था किसी को भी प्राप्त न हो यही हमारी ईश्वर से प्रार्थना है। अब आगे सुनोः-

(श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

पहुंच गये दरबार में इक अद्‌भुत कथा सुनाई, नी ओ अद्‌भुत कथा सुनाई।

अद्‌भुत बात सुनो मेरे साजन, ए बात धुर दी आई नी ओ बात धुर दी आई।।

एसी बात बताऊं ओ साजन, जो सुनने विच कदे न आई।

ओ समझे जिस उमरा भजन बन्दगी विच बिताई, नी ओ बन्दगी विच बिताई।।

कलुकाल ओ ढांधा डिगदा जांदा नी ओ जांदा।

गोते खांदा, सड़दा जांदा, नी ओ रुड़दा जांदा, नी ओ ढांदा रुड़दा जांदा।।

कौन कढ्ढे ओन्हुं कौन ओ पकड़े, कौन खड़ोवे ओहदे कोलूं।

कौन उसदी हमदर्दी करे मुश्क है जैंदे कोलों, नी ओ मुश्क है जैंदे कोलूं।।

कलुकाल कोलों करो किनारा, सतवस्तु दा देखो नज़ारा।

ओ अपनी हिम्मत हार खड़ा किवें तुआनुं देवे सहारा, नी ओ तुआनुं देवे सहारा।।

बजरंगी शब्द फरमाया, हौसला तां ओन्हां नूं आया।

कई सजनां नूं हौसला आया, जीवन किसे विरले बनाया नी ओ जीवन किसे विरले बनाया।।

(श्री साजन जी कह रहे हैं)

शब्दः-

बजरंगी बड़े हितकारी, कौन जित्ते कौन जितने वाला।

हम हैं शरण तुम्हारी दाता हो बलवान जी, जित है ओ सदा तुम्हारी।।

ध्वनिः-

हनुमान जी बगैर साडा कौन है सहायक।

ओन्हां दे बगैर साडा कौन है ओ रक्षक।।

(यह शब्द जनता बोल रही है)

हथ जोड़ करूं चरण बन्दना, चरणां ते करूं निमष्कार जी।

जीवन साडा महाबीर जी बनाओ, एहो आरजू करो स्वीकार जी।।

युग युग जनता करे बन्दना, कोटि कोटि करे प्रणाम।

शहनशाली हो हनुमान जी, नगरी ऊपर कैसी है आपदी शान।।

नहीं कीते वचन प्रवान आपदे, नहीं जपया असां नाम।

सूक्ष्म बात तुआडी समझ न सके, ओ बजरंग बली बलवान।।

सजनों हम तो सारे भाग्यशाली हैं क्योंकि सबसे बलवान सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का हमें साथ मिला हुआ है। अब जो बीती-विहाणी है उसकी हाथ जोड़कर क्षमा-याचना करो और भविष्य के लिये समझदार बच्चे बन जाओ यानि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के शास्त्र विहित वचनों को मन-वचन-कर्म में यथा उतार लो। यकीन मानो कि ऐसा सुनिश्चित करने पर आपके मन में असीम शान्ति उत्पन्न हो जायेगी और आवागमन के चक्कर से मुक्त होना सहज हो जायेगा। अब आगे सुनोः-

(श्री हनुमान जी के मुख के शब्द)

कुर्सी ते जब बैठ गये करने लगे प्रचार।

सुन लौ मेरे साथियो पकड़ो शब्द विचार, कुर्सी ते जब बैठ गये।।

पकड़ो शब्द विचार, जे जीवन बनाना जे।

जैं जीवन बना लिया अपना, फिर नहीं पछोताना जे।

फिर नहीं पछोताना जे, फिर नहीं पछोताना।

जैं जीवन बना लिया अपना, फिर नहीं पछोताना जे।।

(श्री साजन जी कह रहे हैं)

वेद पुकारे, शास्त्र पुकारे, पुकारे वेदों दे रचान वाला।

कलुकाल हुण हटना जे, पुकारे वेदों दे बनान वाला।।

पुकारे वेदों दे बनान वाला, पुकारे वेदों दे बनान वाला।

कलुकाल हुण हटना जे, पुकारे वेदों दे बनान वाला।।

रटन करो नगर निवासियो, हनुमान जी दा नाम सुखल्ला जे।

ओ रौशनी अपनी पहचान कर लौ, हनुमान जी दे कोलों कोई कल्ला जे।।

हनुमान जी दे कोलों कोई कल्ला जे, हनुमान जी दे कोलों कोई कल्ला जे।

ओ रौशनी अपनी पहचान कर लौ, हनुमान जी दे कोलों कोई कल्ला जे।।

(श्री महाबीर जी कह रहे हैं)

वड छोट ओथे है नहीं, न पकड़ो वड दी चाल।

वड दी चाल जैं पकड़ी, दयालु बाहों पकड़ के देनगे निकाल।।

बाहों पकड़ के देनगे निकाल, बाहों पकड़ के देनगे निकाल।

वड दी चाल जैं पकड़ी, दयालु बाहों पकड़ के देनगे निकाल।।

(श्री साजन जी कह रहे हैं)

एक ही मैं हो चुका दूसरा नहीं कोय।

दूसरा कोई किस तरह कहे जब एक एक ही होय।।

कौन करे मेरी मानता, कौन करे मेरी पूजा।

एक हूं सारे भूमण्डल, है नहीं कोई दूजा।।

क्या कहें, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित हर वचन वास्तव में कमाल है। अगर इन वचनों को सुनने के पश्चात भी हमारी बुद्धि मलिन रहती है, मन भ्रमित रहता है तो हमारा कुछ नहीं हो सकता। इससे स्पष्ट समझ आती है कि हम जो वचन सुनते हैं उन पर अमल करने के प्रति दुर्बल रहते हैं क्योंकि हम कामी, क्रोधी, लोभी, मोह के वशीभूत होकर अहंकारी बन जाते हैं। फिर उन्हीं भाव-स्वभावों के गुलाम बनकर गुलामी का जीवन जीने की आदत में ढल जाते हैं। यह निश्चित रूप से अपनी शहनशाही को भूलने जैसी बुरी ही नहीं, महाबुरी बात है। कुदरत ने तो हमें शहनशाह बनाया पर हमने फकीरपना अपना लिया। जानो शहनशाह तो दाता होता है जबकि फकीर मँगता होता है क्योंकि वह हर वक्त माँगता ही रहता है। उसे कभी भी सन्तोष नहीं होता, चाहे कितना ही मिल जाये उसका लोभ तो बढ़ता ही जाता है। खुद को भी आप आदतवश इसी अवस्था में पा रहे हो। माना कि सत्संग में जरा सा सुनकर आप होश में आते हो पर फिर जब कामना सताने लगती है तो उसी में उलझकर रह जाते हो और जो सुना है वह विस्मृत हो जाता है। सजनों इस तरह आप कुदरत द्वारा बख़्शी हुई दात व्यर्थ गँवाकर अपना जीवन बर्बाद करने पर तुले हुए हो। अपने साथ ऐसा अनर्थ मत करो, अपने पर कृपा करो। जीवन को जीवन समझो तथा जो भी मन-वचन-कर्म द्वारा करो वह जीवनदायक करो। इस सन्दर्भ में सजनों जानो कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित हर वचन संजीवनी बूटी के समान है। यह संजीवनी, मरण शय्या पर पड़े हुए सजन को भी पुनः जीवन प्रदान कर उसे भवसागर से पार उतारने में समर्थ है। अतः इन सकारात्मक वचनों की संजीवनी बूटी का नित्य सेवन करना सुनिश्चित करो और इधर-उधर से जो भी मनमत लगाकर बोलते हैं, उनसे बचो और अपने ख़्याल का सीधा सम्पर्क सतवस्तु के साथ ध्यानपूर्वक स्थापित करो। इस तरह सत्य धारणा द्वारा धर्म-संगत जीवन व्यतीत करना आरम्भ कर दो। ऐसा होने पर निःसन्देह आपका जीवन निष्कलंक, निर्विकारी बन जाएगा और आप अपने नित्य भगवानमय-स्वरूप यानि सर्व-व्यापक स्वरूप में परिपूर्णता से खड़े हो जाओगे । फलतः सजनभाव मन में स्थापित हो जायेगा यानि सब वैर-विरोध समाप्त हो जायेंगे और ऐक्य-भाव स्थापित हो जायेगा। फिर समभाव-समदृष्टि होकर निष्पाप, जगत में निर्भयता से विचरना कठिन नहीं रहेगा। इस तरह जीवन का जो मार्ग अभी दुर्गम प्रतीत होता है वह सहज व सुगम हो जायेगा। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों अपने पर कृपा करो और सबको बराबर समझो क्योंकि सर्व-व्यापक भगवान है। जब सर्व-व्यापक वही है तो छोटा-बड़ा कहाँ हुआ। सजनों आज के माहौल में मत उलझो और सत्य को स्वीकारो। आज तो कोई गुरु बन गया तो कोई चेला। इस संदर्भ में ग्रन्थ में भी कहा गया हैः-

फिर गुरु आप चेला ही आप मिट गया फुरना हटे सन्ताप।

मुक गई सकल सामग्री इन्सानों जगत तों हो गयों आज़ाद।।

सजनो हम फिर कह रहे हैं कि अपने पर कृपा कर सद्मार्ग पर अग्रसर होना आरम्भ कर दो।

अन्त में सजनों हम तो यही कहेंगे कि समाज के नैतिक-उत्थान हेतु जो सेवा करो वह निष्काम भाव से सच्चे सेवक बनकर ही करो। इस तरह समाज को नैतिक पतनता से उबारकर पुनः नैतिक अवस्था में साधने के लिये भरसक प्रयत्न करो। मानो सजनों आपकी व आपके परिवारजनों की उन्नति समाज की उन्नति के साथ ही जुड़ी हुई है। इससे समाज ही केवल ऊपर नहीं उठने वाला (क्योंकि समाज तो प्राणियों के समूह से बनता है और उस समूह में आप भी सम्मिलित हो) बल्कि आपकी सेवा रूपी मेहनत से आपका अपना व आपके परिवार का भी भला होने वाला है। उनको नकारात्मक भाव-स्वभावों से मुक्ति मिलने वाली है और वह सकारात्मक भाव-स्वभाव अपनाकर सतयुग में प्रवेश करने वाले हैं यानि सत्य-धर्म के प्रतीक बनने वाले हैं। अतः आप अपने बच्चों का, अपने परिवारों का, अपने मित्रों का भला चाहो और इस हेतु निःस्वार्थ हो जाओ। अपने बच्चों को कुरस्ते से हटाकर सद्मार्ग पर लाने का प्रयत्न करो। याद रखो यदि इस प्रयत्न में आप शामिल नहीं होते तो फिर आप भोग से बच नहीं सकते। ऐसा न हो इस हेतु हम बार-बार आपसे अनुरोध कर रहे हैं कि अपने व अपने परिवार के सजन बनो। उनको कुमति से सुमति में लाने के लिये, यहाँ से जो प्रयत्न हो रहा है, उसमें सम्मिलित करो। ऐसा करने से निश्चित ही काम बन जायेगा वर्ना जीवन भर रोते रहोगे। अब यदि रोना ही पसन्द है तो जैसे चल रहे हो वैसे ही चलते रहो और अगर स्थिरता व शान्ति पसन्द है तो शास्त्र-विहित सलीके में आ जाओ। मतलब यह है कि अविचारयुक्त दुर्गम रास्ता छोड़कर विचारयुक्त रास्ता अपनाने में विलम्ब मत करो। यह अपना उपकार व परोपकार कमाने की बात है। फिर कह रहे हैं कि आपके जीवनोपार्जन की जो भी क्रियाएँ हैं वह करते रहो पर समझो कि यह क्रिया सबसे महत्त्वपूर्ण है क्योंकि नैतिक रूप से पतनता में गिरे हुए समाज का पुनः उत्थान करना सबसे श्रेष्ठ काम है। जो भी इस श्रेष्ठ काम को निष्काम भाव से करता है व सफलता को प्राप्त करके दिखाता है केवल वही श्रेष्ठ मानव कहलाने के योग्य होता है। अतः आपने श्रेष्ठ बनना है और उसके लिये त्याग भावना की आवश्यकता होती है। संसारी कामनायें त्यागनी होती हैं।

काम भाव त्यागकर ऋषि विश्वामित्र की तरह निष्काम भाव होने पर ही ब्रह्म ऋषि कहलाओगे। तभी ब्रह्ममय होकर जगत में विचर पाओगे। अतः अपने पर कृपा करो, परमात्मा आपके साथ हैं।

आप अपने लक्ष्य में कामयाब हों इन्हीं शुभकामनाओं सहित।